'बन्धन विहीना' में नारी-चेतना

▪ सरिता

प्रकाशक
अर्थ विज़न पब्लिकेशन्स
गुड़गांव – 122002

‘बन्धन विहीना’ में नारी चेतना

© 2017 सर्वाधिकार सुरक्षित

हिन्दी : उपन्यास

लेखक : सरिता

20 दिसम्बर, 2017

ISBN: 978-93-84922-62-7 (Hard Bound)

मूल्य : ₹ 250.00 (India)

US Dollar: $ 15 (Includes Shipping Charges)

प्रकाशक :

अर्थ विजन पब्लिकेशन्स

एच-23/16, डी.एल.एफ. फेज-1
गुरुग्राम - 122 002 (हरियाणा) भारत
फोन : 0124-4054392, 098118-42292

पेज सज्जा : www.atozwebguru.com

ई-मेल : earthvisionpublications@gmail.com
mgwebguru@gmail.com

Book Available at : www.flipkart.com, www.amazon.in

Distributor :
ER Publications
Shop No. 33, Agro Mall, Sector 14,
Rohtak-124 001, Haryana
M: +91-8607698989, 8684930049

भूमिका

साहित्य समाज का दर्पण होता है। साहित्य की सशक्त विधा उपन्यास है, क्योंकि इसमें जीवन का समग्र चित्रण होता है। समाज की वास्तविकताओं का यथार्थ चित्रण होता है। कहानी जहाँ समस्या के एक अंश का एक कोण से चित्रण करती है वहीं उपन्यास में समस्या का समग्र एवं गहन चित्रण होता है। उपन्यास की दोनों ही विशेषताओं–व्यापकता व गहनता के माध्यम से जीवन की वास्तविकता का स्वाभाविक ढंग से निरूपण किया जाता है। इसी प्रकार वर्तमान समाज की विसंगतियां उपन्यास के माध्यम से ही अधिक प्रखरता से उभर कर सामने आती हैं।

प्रत्येक मनुष्य का अपना प्रिय विषय होता है। विषय की विभिन्नता तो हर पल हर घड़ी महसूस होती है। मनुष्य चाहे जितने विभिन्न विषयों की बात क्यों न करता हो, लेकिन उसका अपना प्रिय विषय तो होता ही है। जीवन और ज्ञान की बहुत अल्पावस्था से उपन्यास और कहानी पढ़ने की मुझे रूचि रही है। विधा चुनने के बाद विषय चुनाव के संदर्भ में एक बात मेरे मन में स्पष्ट थी। विषय ऐसा हो जिस पर समीक्षात्मक काम कम हुआ हो। मेरी रूचि को ध्यान में रखते हुए डॉ0 संजीव कुमार ने प्रतापनारायण श्रीवास्तव के उपन्यास 'बन्धन विहीना' में नारी चेतना विषय पर काम करने का सुझाव दिया, मुझे ऐसा लगा मानो मेरी मनमांगी मुराद पूरी हो गई।

मेरा विषय नारी से जुड़ा है अतः समाज में नारी की स्थिति को जानना आवश्यक होगा। नारी सृष्टि का मूल है। भोग्या, कामिनी, अबला या माया कहकर उसका महत्त्व संकुचित नहीं किया जा सकता न ही देवी या शक्ति कहकर उसे अतिमानवी बनाया जा सकता है। वह नर की तरह सामान्य प्राणी है। सदियों से नारी को विविध विशेषणों में बांध कर देखने की परम्परा रही है। समयानुरूप मान्यता के अधीन कभी उसके अस्तित्व को महत्त्व दिया गया और कभी उपेक्षा अर्थात नारी को मानवी का दर्जा कभी नहीं दिया गया। लेकिन इतिहास साक्षी है कि नारी ने युद्ध की

विभीषिका में हर आड़े वक्त में पुरूष में सदा मानसिक बल का संचार किया है। अतः पुरूष की प्रेरक शक्ति के रूप में उसका योगदान अविस्मरणीय है। लेकिन वही नारी जब अबला, हीन एवं दूसरे दर्जे का प्राणी घोषित कर चारदीवारी तक सीमित कर दी जाए तो क्या परिवार, समाज व राष्ट्र उन्नति कर सकता है? उत्तर अनिवार्यत नकारात्मक होगा। इसलिए 19वीं शताब्दी में समाज सुधार आन्दोलन शुरू हुआ जिसका मूल उद्देश्य था नारी की स्थिति में सुधार, मानवी रूप में उसके अस्तित्व की सामाजिक स्वीकृति और साथ ही नारी में एक जीवन्त प्राणी के रूप में सोचने–समझने की चेतना उत्पन्न करना। जिस प्रकार परम्परा ने संस्कारों को हस्तान्तरित करते–करते नारी की बौद्धिक–मानसिक क्षमताओं को जड़ कर दिया था उससे मुक्ति दिला नारी को अपने व्यक्तित्व के प्रति सचेत करना भी उस आन्दोलन का प्रमुख लक्ष्य था। नारी के लिए यह काल नवजागरण का महत्वपूर्ण काल रहा है। शिक्षा सुविधाओं एवं कानूनी अधिकार पाकर नारी आज अपने अस्तित्व के प्रति सचेत हो रही है। यह बात भारत ही नहीं बल्कि समस्त विश्व की महिला के सन्दर्भ में कही जा सकती है।

नारी का शिक्षित होना ही जागरूकता नहीं है तथा शिक्षा के बलबूते पर आत्मनिर्भर बनकर आर्थिक स्वतन्त्रता अर्जित करना भी आधुनिकता का प्रमाण नहीं है, केवल यही नारी चेतना के साक्ष्य नहीं है बल्कि आज की नारी का चिन्तन कितना तार्किक है और दृष्टि कितनी उदार है यही चेतना के निर्णायक मानदण्ड कहे जा सकते हैं। अतः प्रतापनारायण श्रीवास्तव जी के उपन्यास में नारी की चेतना का विश्लेषण करने के लिए समस्त अध्ययन को पांच अध्यायों में विभक्त किया गया है।

प्रथम अध्याय में उपन्यासकार प्रतापनारायण श्रीवास्तव के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय देने के उपरान्त उनके अन्तर्गत उनका जन्म, शिक्षा, नौकरी, व्यक्तित्व आदि पर प्रकाश डाला गया है। श्रीवास्तव जी के कृतित्व में उपन्यास, कहानी संग्रह, नाटक, एकांकी आदि का उल्लेख किया गया है।

द्वितीय अध्याय का शीर्षक है 'नारी चेतना' इसके अन्तर्गत चेतना

शब्द के अर्थ को विश्लेषित किया गया है तथा चेतना शब्द की मूल अर्थवत्ता को ग्रहण करते हुए उसे आधुनिक नारी पर चरितार्थ करने के लिए उन्नीसवीं शताब्दी के भारतीय समाज सुधार आन्दोलन का उल्लेख किया गया है। इस समाज सुधार आन्दोलन में बढ़ चढ़ कर भाग लेने वाले समाज सुधारकों का उनकी उपलब्धियों सहित उल्लेख किया गया है। साथ ही यह भी बताया गया है कि इनसे प्रेरणा लेकर स्वयं महिलाओं ने किस प्रकार नारी को वैचारिक जड़ता से मुक्ति दिलाने हेतु आन्दोलन के सूत्र अपने हाथ में लिए और समय–समय पर कट्टर विरोधियों से जुझ कर नारी के लिए सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक अधिकारों को अर्जित किया है। साथ ही चेतना के विविध आयामों आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक चेतना का अर्थ बताया गया है।

तृतीय अध्याय में आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर महिला का विश्लेषण किया गया है। आर्थिक आत्मनिर्भरता नारी में जहाँ आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान का भाव जगाती है, वहीं उसके दायित्व भी बढ़ाती है। इस अध्याय में इन बिन्दूओं पर विशेष बल दिया गया है।

चतुर्थ अध्याय में नारी की सामाजिक चेतना का वर्णन किया हैं समाज में नारी का स्थान व महत्त्व बताते हुए नारी को पारिवारिक सम्बन्धों के मध्य रखकर देखा गया है। बदली परिस्थितियों के अधीन परिवार में नारी की स्थिति व स्थान में परिवर्तन आया है। जागरूक एवं आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होने के कारण विविध पारिवारिक सम्बन्धों विशेषकर दाम्पत्य सम्बन्धों के प्रति उसकी मान्यताएं बदली हैं। प्रेम एवं यौन नैतिकता के परम्परागत मानदण्डों को स्वीकारने को भी वह बाध्य नहीं रही है। अतः उसके दाम्पत्य सम्बन्धों में एक सुनिश्चित परिवर्तन आया है। साथ ही नारी के मातृत्व व पत्नीत्व रूप का वर्णन भी किया है।

पंचम अध्याय में नारी की परम्परागत छवि को नकारते हुए समय की मांग के अनुसार स्त्री की नयी छवि प्रस्तुत की गई है और बताया गया है कि किस प्रकार आधुनिक युग में आत्मजागृत नारी न केवल पारिवारिक व सामाजिक जिम्मेदारियां अच्छे से निभा रही है बल्कि राजनीतिक क्षेत्र में भी बढ़ चढ़ कर भाग ले रही है जिसका उदाहरण सुनयना है तथा अपने

लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपने बलबूते पर संघर्ष भी कर रही है।

अन्त में उपसंहार के रूप में अन्तिम अध्याय की कल्पना की गई है। जिसमें समस्त अध्ययन को सार संक्षेप में समेटने का प्रयास किया गया है।

हिन्दी विभाग ''महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय'' के समस्त आदरणीय गुरुजनों की मैं अत्यधिक आभारी हूँ जिन्होंने समय–समय पर मेरा सम्यक मार्गदर्शन किया। प्रस्तुत अध्ययन की पूर्ति के लिए मैं डॉ. संजीव कुमार की हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने विषय चयन से लेकर विषय प्रतिपादन तक समय–समय पर हुए विचार विमर्श से मुझे महत्वपूर्ण सहयोग दिया। उनके कुशल निर्देशन में मैं इस शोध प्रबन्धिका को पूर्ण करने में समर्थ हुई हूँ। मैं अपने पति व सास–ससुर के प्रति भी श्रद्धानत हूँ जिनके प्रोत्साहन एवं प्ररेणा के अभाव में मेरा यह अध्ययन कार्य शायद पूरा न हो पाता।

– सरिता

fo"k;kuØef.kdk

Hkfedk (i-iv)

iFke v/;k; % irkiukjk;.k JhokLro dk 0;fDrRo ,o Ñfrro 1&9

1.1 व्यक्तित्व

1.2 जन्म

1.3 शिक्षा प्रेरणा स्रोत

1.4 कार्य व्यापार

1.5 कृतित्व

1.6 कहानी

1.7 उपन्यास

1.8 बाल उपन्यास

1.9 एकांकी संग्रह

1.10 अनुवाद

1.11 प्रमुख उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय

1.11.1 बयालीस

1.11.2 विहान

1.11.3 विरागिनी

1.11.4 विकास

1.11.5 विनाश के बादल

f}rh; v/;k; % ukjh&psruk vFk ,o fodkl 10&29

2.1 चेतना

2.2 नारी परिभाषा एवं स्वरूप

2.3 नारी–चेतना का विकास

2.4 शिक्षा का नारी–चेतना में योगदान

2.5 प्रमुख पुरुषों का नारी–चेतना में योगदान

2.6 महिला संगठनों का नारी चेतना में योगदान

2.7 नारी चेतना के विविध आयाम

2.7.1 आर्थिक चेतना एवं नारी

2.7.2 सामाजिक चेतना एवं नारी

2.7.3 राजनीतिक चेतना एवं नारी

r`rh; v/;k; % cU/ku foghuk miU;kl e: ukjh dh vkfFkZd&psruk 30&46

3.1 आर्थिक रूप से पराश्रित नारी

3.2 आर्थिक स्वावलम्बन प्राप्त करने के कारण

3.3 आर्थिक स्वावलम्बन और नारी

3.4 नारी की अर्थोपार्जन लिप्सा एंव घर परिवार पर उसका प्रभाव

3.5 व्यक्तित्व पर प्रभाव

prqFkZ v/;k; % cU/ku foghuk miU;kl e: ukjh dh lkekftd psruk 47&71

4.1 घर परिवार और नारी

4.4.1 एकल परिवार और नारी

4.2 माता–पिता के साथ सम्बन्ध

4.3 दाम्पत्य सम्बन्ध एवं नारी

4.3.1 कटु दाम्पत्य सम्बन्ध

4.3.2 मधुर दाम्पत्य सम्बन्ध

4.4 परिवार में नारी के विविध रूप

4.4.1 नारी का मातृत्व रूप

4.4.2 नारी का पतिव्रत्य रूप

iape v/;k; % cU/ku foghuk miU;kl e: ukjh dh jktuhfrd psruk 72&86

5.1 राजनीति और नारी

5.2 राजनीतिक सम्बन्ध व नारी5.2.1 अवैध सम्बन्ध

5.2.2 वैध सम्बन्ध

5.3 राजनैतिक भ्रष्टाचार और नारी

5.4 तत्कालीन राजनीति का चित्रण

mi lgkj 87&91

lUnHk xUFk lph 92&94

प्रथम अध्याय

प्रतापनारायण श्रीवास्तव का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रेमचन्दयुगीन उपन्यासकारों में प्रतापनारायण श्रीवास्तव जी का अपना एक विशिष्ट स्थान है। श्रीवास्तव जी बहुमुखी प्रतिभावान लेखक हैं। गद्य एवं पद्य की कोई ऐसी विद्या नहीं जो इनसे अछूती रही हो। गद्य में इन्होंने उपन्यासों के अतिरिक्त कहानी, एकांकी आदि विद्याओं को भी नए आयाम दिए।

प्रतापनारायण श्रीवास्तव बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार हैं। उनका सर्वाधिक सशक्त रूप उपन्यासकार का है, फिर भी उन्होंने साहित्य की अन्य विधाओं पर भी पूरे अधिकार के साथ लेखनी चलाई है। प्रेमचन्दयुगीन उपन्यासकारों में प्रतापनारायण श्रीवास्तव का नाम उल्लेखनीय है। इनके उपन्यास आदर्शवादी परम्परा के उपन्यास कहे जा सकते हैं। प्रेमचन्द जी ने ग्राम्य जीवन और निम्नवर्गों का सफल चित्रण करके अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया और श्रीवास्तव जी ने नगरीय जीवन और उच्च वर्गों के क्रियाकलापों का यथार्थ अंकन करके भावी कलाकारों का मार्गदर्शन किया। वह हिन्दी के शीर्षस्थ और अन्यतम कथा शिल्पियों में है। इसी बात की पुष्टि करते हुए डॉ. इन्द्रनाथ मदान ने अपनी पुस्तक 'आज का हिन्दी उपन्यास' में उनके बारे में लिखा है। ''अमर कथाशिल्पी श्री प्रतापनारायण श्रीवास्तव हिन्दी कथा साहित्य के प्रतिष्ठापकों, परिष्कारकों और संवर्धकों में हैं।''[1]

प्रतापनारायण श्रीवास्तव का लेखन कार्य स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व ही शुरू हो चुका था और इसी कारण से स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व तथा बाद की समस्याओं को उन्होंने अपने साहित्य में चित्रित किया है। विशेष रूप से स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् हमारे सामाजिक जीवन में हुए परिवर्तन और नई उत्पन्न हुई समस्याओं का सर्वाधिक चित्रण श्रीवास्तव जी ने किया है। उन्होंने एकांकी, कहानी उपन्यास आदि विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई। संक्षेप में इनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व निम्नानुसार है।

---

1. इन्द्रनाथ मदान, आज का हिन्दी उपन्यास, पृष्ठ सं. 172।